[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper	:	**8098**	**L**
Unique Paper Code	:	2103200014	
Name of the Paper	:	Philosophy of Language	
Name of the Course	:	**BA Philosophy DSE (NEP-UGCF)**	
Semester	:	VIII	

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

Instructions for Candidates

छात्रों के लिए निर्देश.

1. Write your Roll No- on the top immediately on receipt of this question paper.

   इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. Answers five questions.

   किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

3. All questions carry equal marks.

   सभी प्रश्नों के अंक सामान हैं।

4. Answers may be written either in Hindi or in English but the same medium should be followed throughout the paper.

   इस प्रश्न पत्र का उत्तर अंग्रेजी या हिन्दी में से किसी एक भाषा में दीजिए परन्तु सभी उत्तरों का माध्यम एक ही होना चाहिए ।

1. Elaborate in detail on the relationship between 'Śabda' and 'Artha' in the context of Patañjali's linguistic philosophy.
   पतंजलि के भाषाई दर्शन के संदर्भ में 'शब्द' और 'अर्थ' के संबंध का विस्तृत वर्णन कीजिए ।
2. Discuss the origin of the term 'Sphoṭa' and how Patañjali distinguishes between 'Sphoṭa' (permanent) and 'Dhvani' (ephemeral).
   स्फोट' शब्द की उत्पत्ति की विवेचना कीजिए और बताइए कि पतंजलि 'स्फोट' (नित्य) और 'ध्वनि' (अनित्य) के बीच कैसे अंतर करते हैं।

3. Discuss the complexities of translating the term 'Śabda' into Western philosophical categories, as analyzed by B.K. Matilal.
बी.के. मतिलाल द्वारा किए गए विश्लेषण के अनुसार, 'शब्द' पद को पश्चिमी दार्शनिक श्रेणियों में अनुवाद करने की जटिलताओं की विवेचना कीजिए।

4. What are the three levels of language (Vaikharī, Madhyamā, Paśyantī) in Bhartṛhari's philosophy and how they express the manifestation of Śabda-Brahman?
भर्तृहरि के दर्शन में तीन भाषा के स्तर (वैखरी, मध्यमा, पश्यंती) क्या हैं, और वे शब्द-ब्रह्म की अभिव्यक्ति कैसे दर्शाते हैं?

5. Discuss the principle of 'Arbitrariness' of the sign as described in Saussure's 'Course in General Linguistics'.
सॉसोर की पुस्तक 'कोर्स इन जनरल लिंग्विस्टिक्स' में वर्णित संकेत की 'यादृच्छिकता' के सिद्धांत की विवेचना कीजिए।

6. What does Gottlob Frege mean by 'Thought' in his article 'Thought: A Logical Inquiry'? Explain how it differs from private ideas.
गॉटलॉब फ्रेगे के लेख 'थॉट: ए लॉजिकल इंक्वायरी' में 'विचार' का क्या अर्थ है? व्याख्या कीजिए कि यह व्यक्तिगत प्रत्ययों से कैसे भिन्न है।

7. What is a 'Rigid Designator' according to Kripke in 'Identity and Necessity'? Explain using the example of proper names.
क्रिपके के 'आइडेंटिटी एंड नेसेसिटी' के अनुसार व्यक्तिवाचक संज्ञा और 'अपरिवर्तनीय संकेतक' (रिजिड डेजिग्नेटर्स) क्या हैं? व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के उदाहरण का उपयोग करके स्पष्ट कीजिए।

8. Why John Perry believes that indexical like 'I', 'here', and 'now' are essential for human action and cannot be replaced by objective descriptions? Discuss.
जॉन पेरी क्यों मानते हैं कि 'मैं', 'यहाँ' और 'अभी' जैसे अनुक्रमणी (इंडेक्सिकल) मानवीय क्रिया के लिए अनिवार्य हैं और उन्हें वस्तुनिष्ठ विवरणों द्वारा प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता? विवेचना कीजिए।

9. Write in detail the distinction Predelli makes between the 'Context of Utterance' and the 'Context of Interpretation' in understanding indexical.
अनुक्रमणिकाओं को समझने में प्रेडली द्वारा 'उच्चारण के संदर्भ' और 'व्याख्या के संदर्भ' के बीच किए गए अंतर को विस्तार से लिखिए।